पाठ ०९: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

परशुराम जी का आगमन और राजाओं का भय

- **देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।**

अर्थ: परशुराम जी के अत्यंत भयानक भेष को देखकर सभा में उपस्थित सभी राजा भय से व्याकुल होकर अपने-अपने आसनों से उठ खड़े हुए।

- **पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा ।।**

अर्थ: वे सभी राजा अपने-अपने पिताओं के नाम के साथ अपना नाम ले-लेकर परशुराम जी को दण्डवत् प्रणाम करने लगे।

- **जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी।।**

अर्थ: परशुराम जी स्वभाव से ही जिसकी ओर (अपना हित समझकर भी) देखते थे, वह राजा डर के मारे यही समझता था कि मानो उसका काल (बुरा समय) आ गया हो।

- **जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा।।**

अर्थ: फिर राजा जनक ने आगे आकर उनके चरणों में सिर नवाया और सीता जी को भी बुलाकर उनसे प्रणाम कराया।

- **आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गईं सयानीं।।**

अर्थ: परशुराम जी ने सीता जी को आशीर्वाद दिया, जिससे सखियाँ हर्षित हो गईं और चतुर सखियाँ सीता जी को वापस अपनी सहेलियों के समूह में ले गईं।

श्री राम और लक्ष्मण से भेंट

- **बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई।।**

अर्थ: इसके बाद विश्वामित्र जी आकर उनसे मिले और उन्होंने दोनों भाइयों (राम और लक्ष्मण) को परशुराम जी के चरण कमलों में प्रणाम कराया।

- **रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा।।**

अर्थ: विश्वामित्र जी ने परिचय दिया कि ये महाराजा दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण हैं। इस सुंदर जोड़ी को देखकर परशुराम जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

- **रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन ।।**

अर्थ: श्री राम जी के अपार सौंदर्य को देखकर, जो कामदेव के भी गर्व को चूर करने वाला था, परशुराम जी की आँखें उन पर ही टिकी रह गईं (वे ठिठक कर रह गए)।

परशुराम जी का क्रोध और जनक से प्रश्न

- **बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर। पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर॥**

अर्थ: फिर राजा जनक (विदेह) की ओर देखकर वे पूछने लगे कि यहाँ यह भारी भीड़ कैसी है? वे सब कुछ जानते हुए भी अनजाने की तरह पूछ रहे थे और उनका पूरा शरीर क्रोध से काँप रहा था।

- **समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए॥**

अर्थ: राजा जनक ने वे सारे समाचार कह सुनाए, जिसके कारण संसार भर के राजा यहाँ एकत्र हुए थे।

- **सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे॥**

अर्थ: जनक की बात सुनकर परशुराम जी ने दूसरी तरफ देखा, तो उन्हें पृथ्वी पर पड़े हुए धनुष के टुकड़े दिखाई दिए।

- **अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥**

अर्थ: यह देखकर वे अत्यंत क्रोधित होकर कठोर वचन बोले— "हे मूर्ख जनक! बता, यह शिवजी का धनुष किसने तोड़ा है?"

- **बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू॥**

अर्थ: "हे मूर्ख! उसे जल्दी मेरे सामने ला, नहीं तो आज जहाँ तक तेरा राज्य है, मैं वहाँ तक की धरती को उलट दूँगा।"

सभा में भय का माहौल

- **अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥**

अर्थ: अत्यधिक डर के मारे राजा जनक से कोई उत्तर नहीं देते बन रहा था। जनक को डरा हुआ देखकर दुष्ट राजा मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे।

- **सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥**

अर्थ: देवता, मुनि, नाग और नगर के सभी स्त्री-पुरुष भयभीत हो गए और सबके हृदय में भारी चिंता छा गई।

- **मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी॥**

अर्थ: सीता जी की माता (रानी सुनयना) मन ही मन पछता रही थीं कि विधाता ने अब बनी-बनाई बात बिगाड़ दी है।

- **भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता॥**

अर्थ: परशुराम जी के अत्यंत क्रोधी स्वभाव के बारे में सुनकर सीता जी को इतना भय हुआ कि उनका आधा पल भी एक कल्प (युग) के समान लंबा बीत रहा था।

श्री राम का विनम्र संवाद

- **सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु। हृदयं न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।**

अर्थ: सब लोगों को डरा हुआ देखकर और सीता जी (जानकी) को भयभीत जानकर, जिनके हृदय में न कोई हर्ष था और न कोई दुख, वे श्री रघुवीर (श्री राम) अत्यंत शांत भाव से बोले—

- **नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।**

अर्थ: "हे नाथ! शिवजी के इस धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा।"

- **आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।**

अर्थ: "मेरे लिए क्या आज्ञा है, आप मुझसे क्यों नहीं कहते?" यह सुनकर क्रोधी मुनि परशुराम और अधिक गुस्सा होकर बोले—

- **सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।**

अर्थ: "सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे। शत्रुता का काम करके तो केवल लड़ाई ही मोल ली जाती है।"

- **सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।**

अर्थ: "हे राम! सुनो, जिसने भी शिवजी का यह धनुष तोड़ा है, वह सहस्त्रबाहु के समान मेरा परम शत्रु है।"

- **सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।**

अर्थ: "वह व्यक्ति इस राजाओं के समाज को छोड़कर तुरंत अलग खड़ा हो जाए, नहीं तो यहाँ उपस्थित सभी राजा मेरे हाथों मारे जाएँगे।"

लक्ष्मण जी का व्यंग्य और परशुराम का क्रोध

- **सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।**

अर्थ: मुनि परशुराम के वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और परशुराम जी का (व्यंग्य में) अनादर करते हुए बोले—

- **बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।**

अर्थ: "हे स्वामी! हमने बचपन में खेल-खेल में ऐसी बहुत सी धनुहियाँ (छोटे धनुष) तोड़ी हैं, तब तो आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया।"

- **एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।**

अर्थ: "फिर इसी धनुष पर आपकी इतनी ममता किस कारण से है?" लक्ष्मण जी की यह बात सुनकर भृगुवंश की ध्वजा स्वरूप परशुराम जी क्रोधित होकर बोले—

- **रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।**

अर्थ: "हे राजा के बालक (राजकुमार)! तू काल के वश में है, इसलिए तुझे बोलने का कोई होश नहीं है। जिस भगवान शिव के धनुष को पूरा संसार जानता है, क्या वह तुझे एक साधारण धनुही (साधारण धनुष) के समान लगता है?"

<u>सम्पूर्ण भावार्थ</u>

पद्यांश १: परशुराम का भयानक आगमन और सभा का भय

कठिन शब्दार्थ

- **भृगुपति बेषु:** भृगुकुल के स्वामी परशुराम का वेष
- **कराला:** भयानक, डरावना
- **बिकल भुआला:** व्याकुल हुए राजागण
- **खुटानी:** खोट, बुराई या विनाश का समय
- **बहोरि:** फिर या दोबारा
- **सयानीं:** चतुर या समझदार
- **ढोटा:** पुत्र या बालक
- **मार मद मोचन:** कामदेव के गर्व को चूर करने वाले श्रीराम
- **बिदेह:** राजा जनक (देह-अभिमान से रहित)

मूल काव्यांश

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।

..

..

पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर।।

सरल व्याख्या

सीता स्वयंवर के मंच पर जैसे ही शिव-धनुष के टूटने का भयंकर समाचार मुनि परशुराम को मिलता है, वे अत्यधिक क्रोध में भरकर सभा में प्रवेश करते हैं। परशुराम के उस अत्यंत भयानक और रौद्र वेष को देखते ही स्वयंवर सभा में उपस्थित सभी राजा भय के कारण व्याकुल होकर अपने-अपने आसनों से उठ खड़े हुए। वे सभी राजा अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपने पिताओं के नाम के साथ अपना-अपना नाम पुकार-पुकार कर परशुराम को भूमि पर लेटकर दंडवत् प्रणाम करने लगे। परशुराम उस समय अपने स्वाभाविक उग्र स्वभाव से जिसकी ओर भी देखते थे, वह राजा यही समझता था कि मानो आज उसकी मौत (खोट) आ गई है।

इसके पश्चात राजा जनक ने आगे आकर मुनि के चरणों में अपना सिर नवाया और अपनी पुत्री सीता को बुलाकर उनसे परशुराम का अभिवादन (प्रणाम) कराया। मुनि ने सीता को सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया, जिससे सखियाँ हर्षित हो गईं और चतुर सखियाँ सीता को अपनी मंडली में वापस ले गईं। तत्पश्चात मुनि विश्वामित्र ने आगे आकर परशुराम से भेंट की और उनके चरणों में दशरथ के दोनों पुत्रों—राम और लक्ष्मण को झुकाकर उनके चरण-कमलों की वंदना कराई। दशरथ के इन सुंदर बालकों की अद्भुत जोड़ी को देखकर परशुराम ने उन्हें कल्याण का आशीर्वाद दिया।

कामदेव के गर्व को चूर करने वाले श्रीराम के इस अपार अनुपम सौंदर्य को देखकर परशुराम की आँखें थकी-सी खुली रह गईं। परंतु तुरंत ही धरती पर पड़े शिव-धनुष के टुकड़ों को देखकर परशुराम का पूरा शरीर क्रोध से काँप उठा और वे राजा जनक से अनजान की तरह पूछने लगे—"हे जनक! बता यहाँ राजाओं की यह भारी भीड़ किसलिए एकत्र हुई है?"

पद्यांश २: शिव-धनुष खंडन पर रोष और लक्ष्मण का प्रत्युत्तर

कठिन शब्दार्थ

- **चापखंड:** धनुष के टुकड़े या भाग
- **मही:** पृथ्वी या भूमि
- **जड़:** मूर्ख या बुद्धिहीन
- **भंजनिहारा:** भंग करने वाला या तोड़ने वाला
- **आयसु:** आज्ञा या आदेश
- **रिसाई / कोही:** क्रोधित होकर / अत्यंत क्रोधी
- **अरि करनी:** शत्रुतापूर्ण कार्य
- **सहसबाहु:** सहस्रबाहु (परशुराम का परम शत्रु राजा)
- **लरिकाईं:** लड़कपन या बचपन में
- **भृगुकुलकेतू:** भृगुकुल के केतु (दीपक) अर्थात परशुराम
- **तिपुरारि धनु:** त्रिपुरारी शिव का महान धनुष

मूल काव्यांश

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।

..

..

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।

सरल व्याख्या

राजा जनक ने परशुराम को स्वयंवर के वे सारे समाचार कह सुनाए जिसके कारण पृथ्वी के विभिन्न कोनों से सभी राजा (महीप) यहाँ पधारे थे। जनक के वचनों को सुनते ही परशुराम ने दूसरी ओर दृष्टि घुमाई और धरती पर पड़े शिव-धनुष के टुकड़ों (चापखंड) को देखा। वे अत्यधिक क्रोध (रिस) से भरकर कठोर और तीखे वचन बोले—"हे मूर्ख (जड़) जनक! बता यह शिव-धनुष किसने तोड़ा है? उस पापी को शीघ्र (बेगि) मेरे सामने ला, नहीं तो आज मैं तेरे पूरे राज्य को उलट दूँगा।" परशुराम के इस भयानक रूप के डर से राजा जनक के मुँह से कोई उत्तर नहीं निकल रहा था, जिसे देखकर सभा में उपस्थित अन्य कुटिल राजा मन ही मन बहुत खुश हो रहे थे। देवता, मुनि, नाग और जनकपुर के सभी नर-नारी इस भयंकर संकट को देखकर अपने हृदय में भारी त्रास (डर) महसूस करने लगे। सीता की माता सुनयना भी मन ही मन पछताने लगीं कि विधाता ने बनी-बनाई सुंदर बात को अचानक बिगाड़ दिया है। परशुराम के इस क्रूर

स्वभाव को जानकर सीता जी के लिए भी आधा क्षण (अरध निमेष) एक कल्प या युग के समान लंबा और कष्टकारी बीत रहा था।

पूरी सभा को भयभीत और जानकी (सीता) को डरा हुआ जानकर, अपने हृदय में बिना किसी हर्ष या दुख (विषाद) के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अत्यंत शांत और कोमल स्वर में बोले—"हे नाथ! शिवजी के इस महान धनुष को तोड़ने वाला (भंजनिहारा) आपका ही कोई एक दास होगा। आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?" श्रीराम के इन अत्यंत शांत वचनों को सुनकर क्रोधी मुनि और अधिक क्रोधित होकर बोले—"सेवक वह होता है जो सेवा का कार्य करे। शत्रुतापूर्ण कार्य (अरि करनी) करके तो केवल लड़ाई ही मोल ली जाती है। हे राम! सुनो, जिसने भी यह शिव-धनुष तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा परम शत्रु (रिपु) है। वह पापी तुरंत इस पूरे राज-समाज को छोड़कर अलग (बिलगाउ) हो जाए, नहीं तो यहाँ उपस्थित सभी राजा मेरे हाथों मारे जाएँगे।"

मुनि परशुराम के इन अहंकारपूर्ण और क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मन ही मन मुस्कुराने लगे और परशुराम का उपहास (अपमान) करते हुए बोले—"हे गोसाई! बचपन (लरिकाई) में खेल-खेल में हमने ऐसी बहुत-सी छोटी धनुहियाँ तोड़ी हैं, तब तो आपने कभी ऐसा भीषण क्रोध नहीं किया! इसी विशिष्ट धनुष पर आपकी इतनी गहरी ममता और लगाव किस कारण से है?" लक्ष्मण के इस व्यंग्य को सुनकर भृगुकुल के दीपक परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर बोले—"हे राजा के बालक (नृप बालक)! काल के वश होने के कारण तुझे अपने वचनों पर कोई नियंत्रण (सँभार) नहीं है। संपूर्ण संसार में विख्यात भगवान त्रिपुरारी शिव का यह महान धनुष क्या तुझे बचपन की मामूली धनुही के समान दिखाई देता है?"

यहाँ रामचरितमानस (बालकाण्ड) के इस प्रसंग का पंक्ति-वार सरल हिंदी अर्थ दिया गया है। यह उस समय का प्रसंग है जब श्री राम द्वारा शिव-धनुष तोड़े जाने के बाद भगवान परशुराम सभा में आते हैं।